NEEV

2027

गद्य खंड

क्या लिखूँ?

Lecture - 02

Class -9th | HINDI

By- अदिति मैम

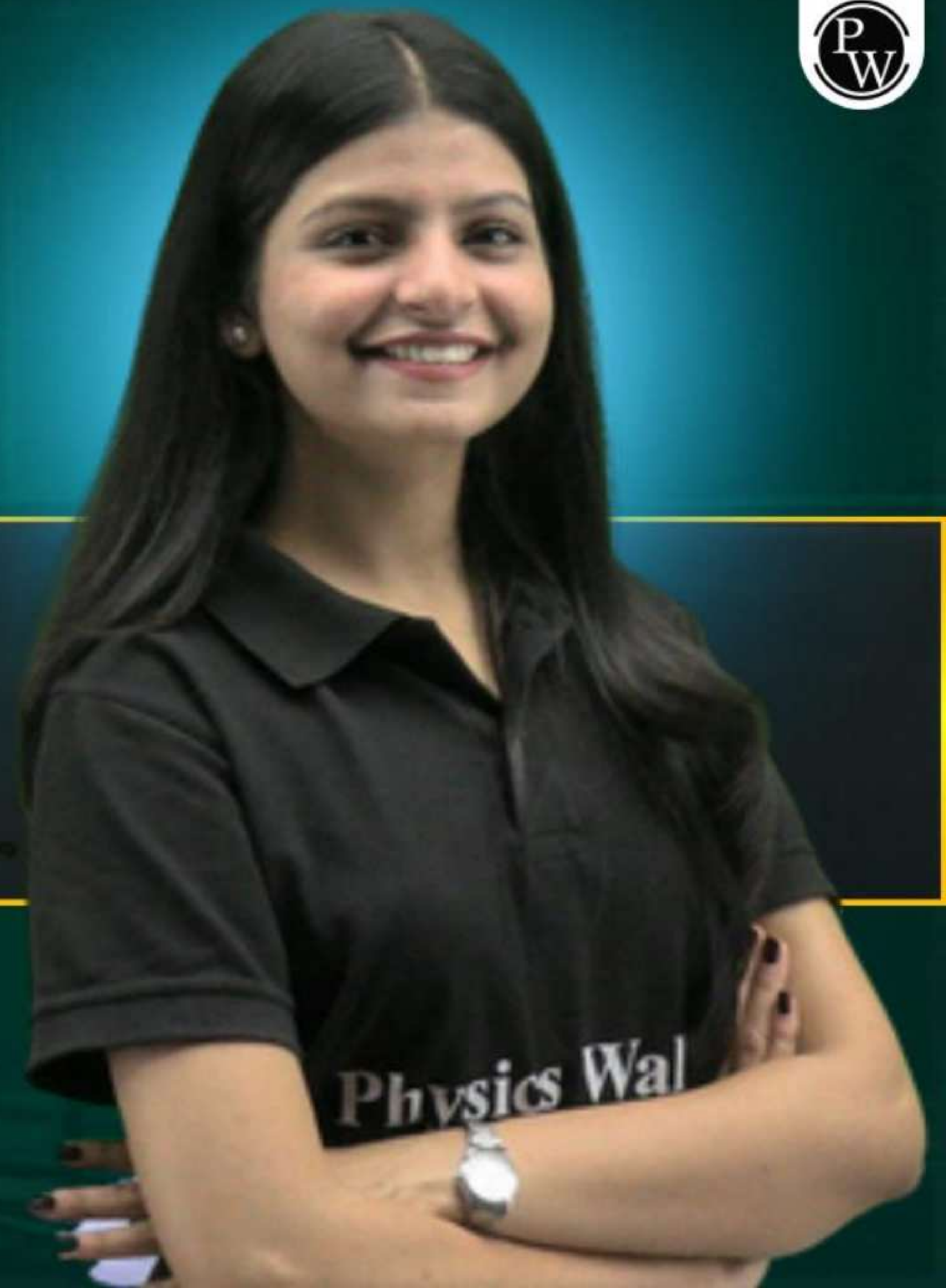

पाठ सूची

1. लेखक-परिचय
2. क्या लिखूँ? line to line
3. बहुविकल्पीय प्रश्न
4. लघु उत्तरीय प्रश्न

HELL
CUTIES..!

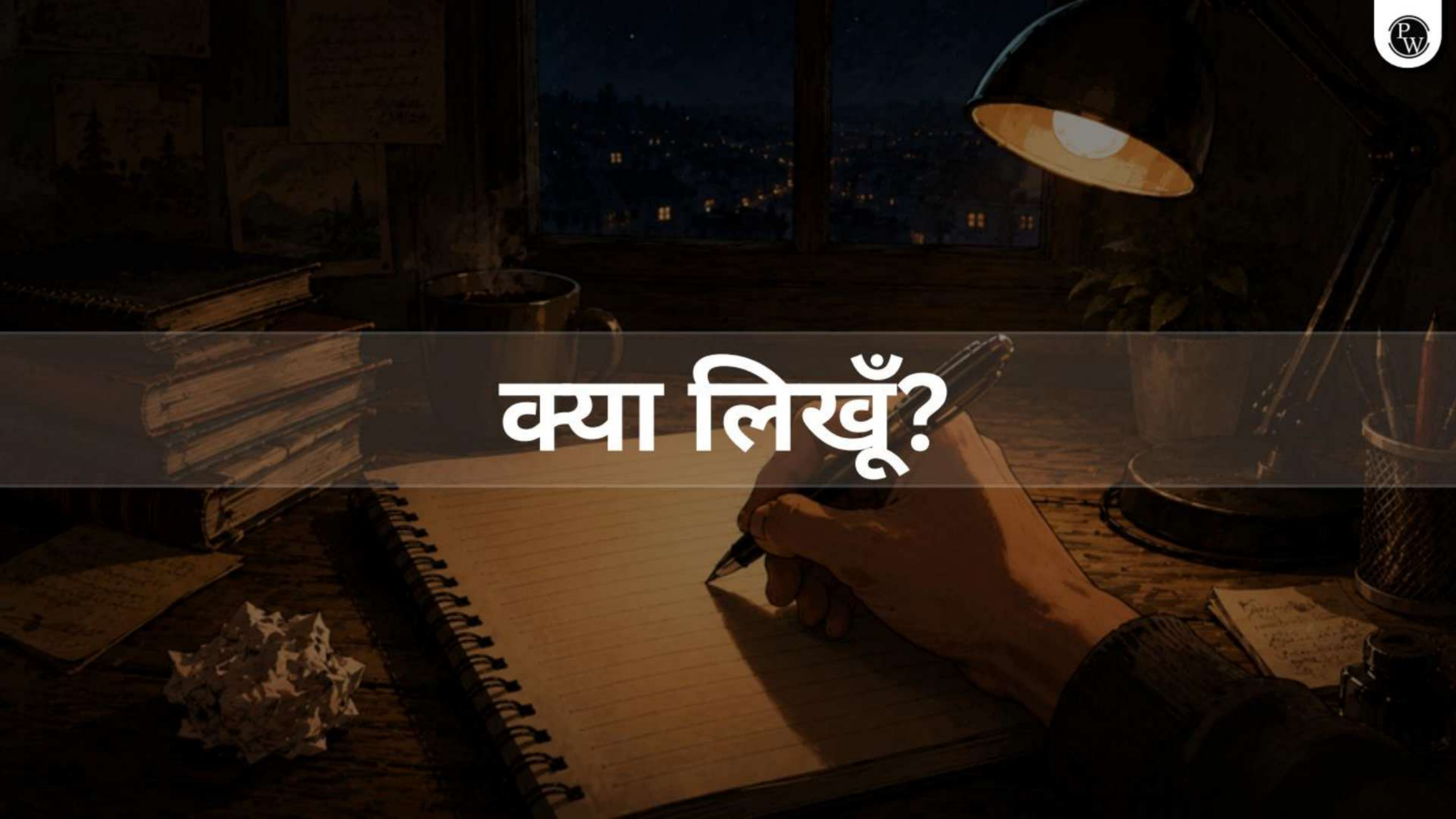
क्या लिखूँ?

लेखक परिचय

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

नाम - पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

जन्म - सन् 1894, खैरागढ़ राजनंदगाँव छत्तीसगढ़ में हुआ था।

इन्होंने अपने लेखन में अध्यात्म, सामाजिक सुधार और लोक-जीवन को विशेष महत्त्व दिया है। उनका साहित्य विचारशीलता और गहन अध्ययन का परिचय देता है।

पाठ का सार

"इस पाठ में लेखक निबंध-लेखन की कठिनाइयों और तरीकों को हास्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है। वह बताता है कि अच्छे निबंध के लिए सामग्री, शैली और अभ्यास आवश्यक होते हैं, लेकिन हर लेखक की अपनी अलग पद्धति होती है। लेखक 'दूर के ढोल सुहावने' के माध्यम से समझाता है कि दूर की चीजें हमें अधिक अच्छी लगती हैं, क्योंकि उनकी वास्तविकता का पता नहीं होता। इसी तरह मनुष्य कभी भविष्य को तो कभी अतीत को श्रेष्ठ मानता है और वर्तमान से असंतुष्ट रहता है। समाज में हमेशा सुधार की आवश्यकता बनी रहती है और समय के साथ नए सुधार होते रहते हैं। जो आज नया है, वह कल पुराना हो जाता है। अंत में लेखक निष्कर्ष देता है कि जीवन में परिवर्तन और प्रगति निरंतर चलती रहती है।"

क्या लिखूँ ?

अमीता

नमीता।

क्या कठिनाईयाँ आती हैं।

मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंध लेखक ए. जी. गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिंता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं।

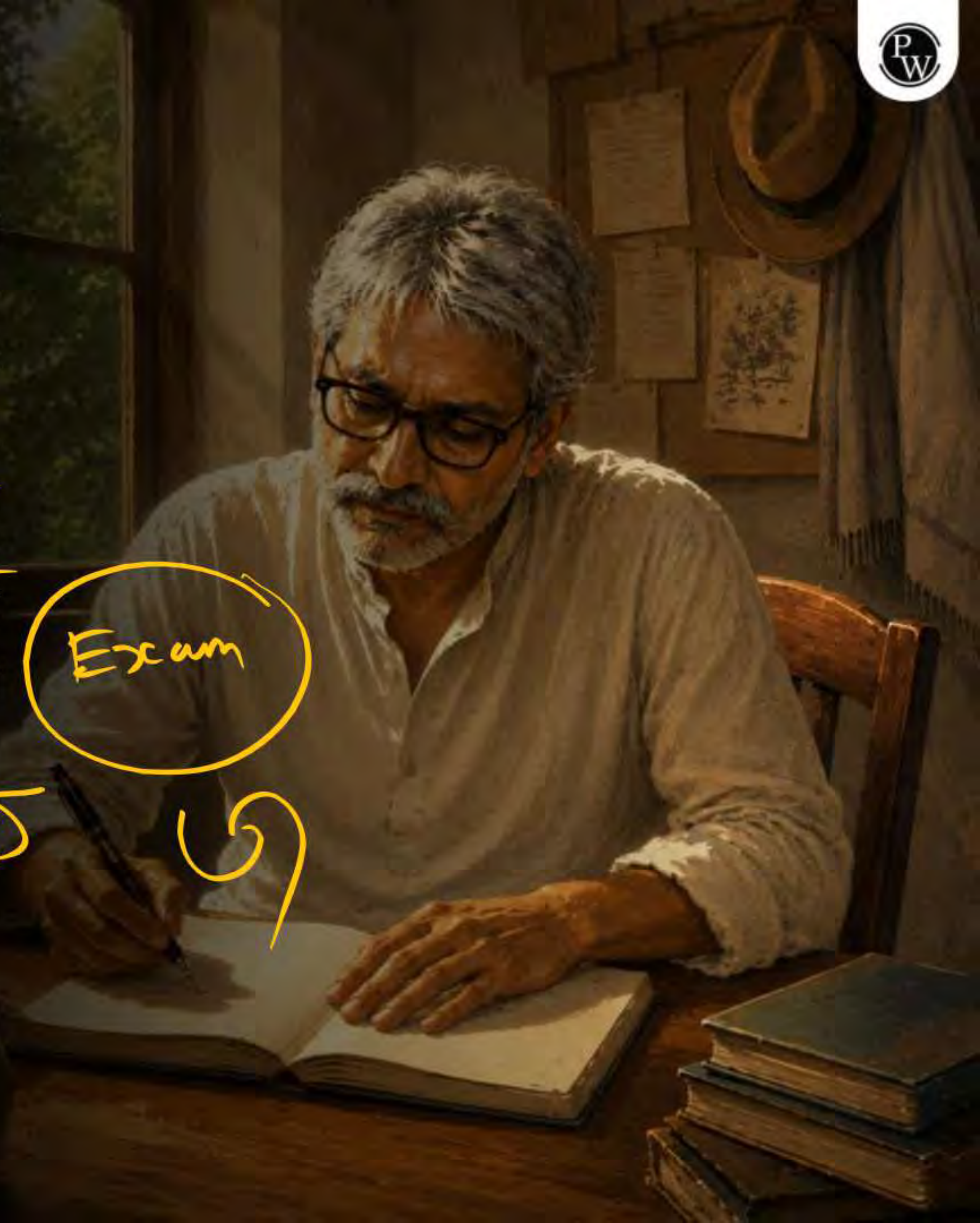

गार्डिनर साहब के इस कथन की यथार्थता में मुझे संदेह नहीं, पर मेरे लिए कठिनता यह है कि मैंने उस मानसिक स्थिति का अनुभव ही नहीं किया है, जिसमें भाव अपने आप उत्थित हो जाते हैं। मुझे तो सोचना पड़ता है, चिंता करनी पड़ती है, परिश्रम करना पडता है, तब कहीं मैं एक निबंध लिख सकता हूँ। आज तो मुझे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि मुझे कोई साधारण निबंध नहीं लिखना है। आज मुझे नमिता और अमिता के लिए आदर्श निबंध लिखना होगा। नमिता का आदेश है कि मैं 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' इस विषय पर लिखूँ। अमिता का आग्रह है कि मैं समाज-सुधार पर लिखूँ, ये दोनों ही विषय परीक्षा में आ चुके हैं और उन दोनों पर आदर्श निबंध लिखकर मुझे उन दोनों को निबंध-रचना का रहस्य समझाना पड़ेगा।

दूर के ढोल सुहावने अवश्य होते हैं। पर क्या वे इतने सुहावने होते हैं कि उन पर पाँच पेज लिखे जा सकें? इसी प्रकार जिस समाज-सुधार की चर्चा अनादि काल से लेकर आज तक होती आ रही है और जिसके संबंध में बड़े-बड़े विज्ञों में भी विरोध है, उसको मैं पाँच पेज में कैसे लिख दूँ? मैंने सोचा कि सबसे पहले निबंधशास्त्र के आचार्यों की सम्मति जान लूँ। पहले यह तो समझ लूँ कि आदर्श निबंध है क्या और वह कैसे लिखा जाता है, तब फिर मैं विषय की चिंता करूँगा। इसलिए मैंने निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाएँ देखीं।

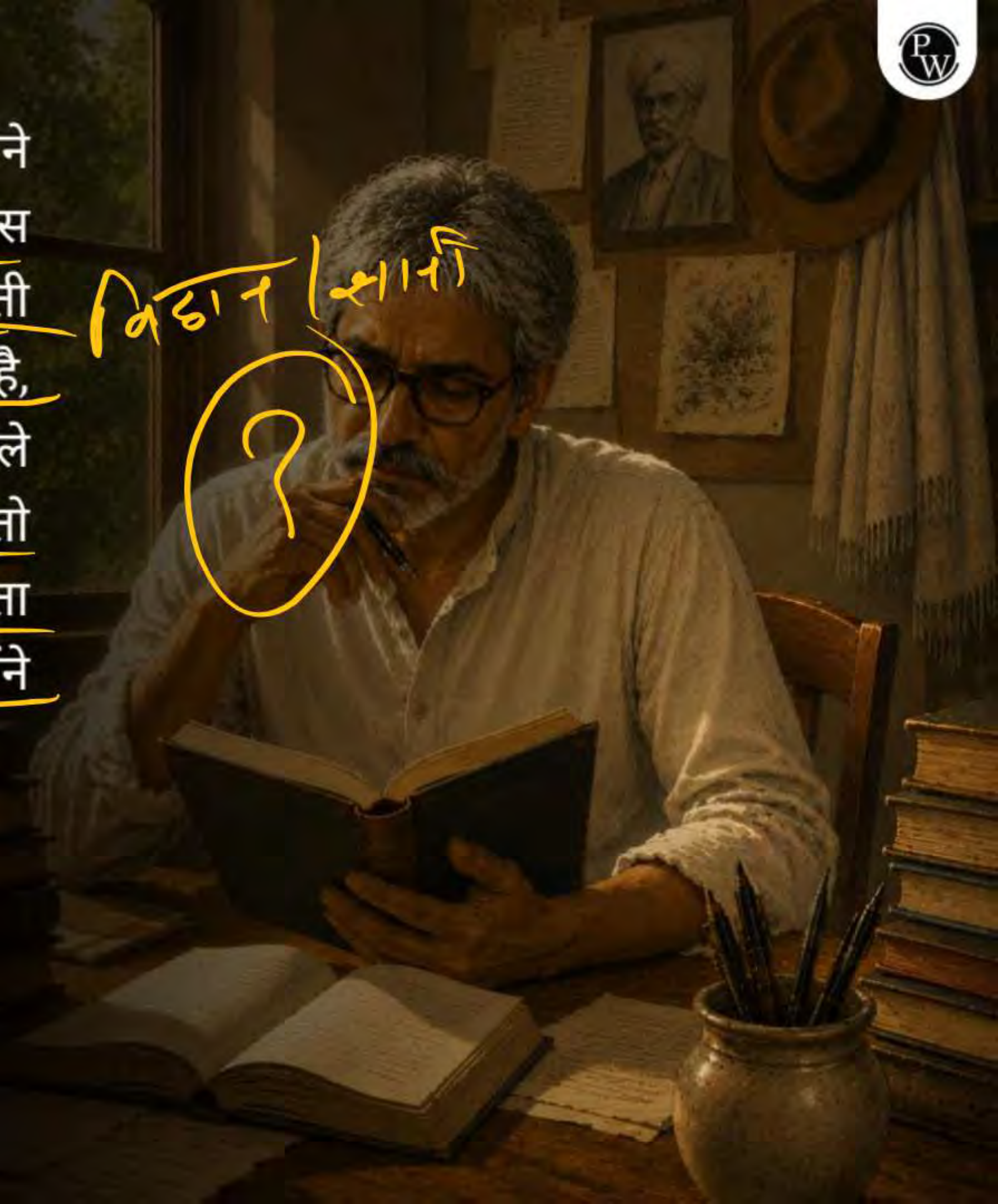

एक विद्वान का कथन है कि निबंध छोटा होना चाहिए। छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है, क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती। इस कथन को मान लेने में ही मेरा लाभ है। मुझे छोटा ही निबंध लिखना है, बड़ा नहीं। पर लिखूँ कैसे? निबंधशास्त्र के उन्हीं आचार्य महोदय का कथन है कि निबंध के दो प्रधान अंग हैं— सामग्री और शैली। पहले तो मुझे सामग्री एकत्र करनी होगी, विचार-समूह संचित करना होगा। इसके लिए मुझे मनन करना चाहिए। यह तो सच है कि जिसने जिस विषय का अच्छा अध्ययन किया है, उसके मस्तिष्क में उस विषय के विचार आते हैं।

पर यह कौन जानता था कि 'दूर के ढोल सुहावने' पर भी निबंध लिखने की आवश्यकता होगी। यदि यह बात पहले से ज्ञात होती तो पुस्तकालय में जाकर इस विषय का अनुसंधान कर लेता; पर अब समय नहीं है। मुझे तो यहीं बैठकर दो ही घंटों में दो निबंध तैयार कर देने होंगे। यहाँ न तो विश्वकोश है और न कोई ऐसा ग्रंथ जिसमें इन विषयों की सामग्री उपलब्ध हो सके। अब तो मुझे अपने ही ज्ञान पर विश्वास कर लिखना होगा।

विज्ञों का कथन है कि निबंध लिखने के पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। अतएव सबसे पहले मुझे 'दूर के ढोल सुहावने' की रूपरेखा बनानी है। मैं सोच ही नहीं सकता कि इस विषय की कैसी रूपरेखा है। निबंध लिख लेने के बाद मैं उसका सारांश कुछ ही वाक्यों में भले ही लिख दूँ, पर

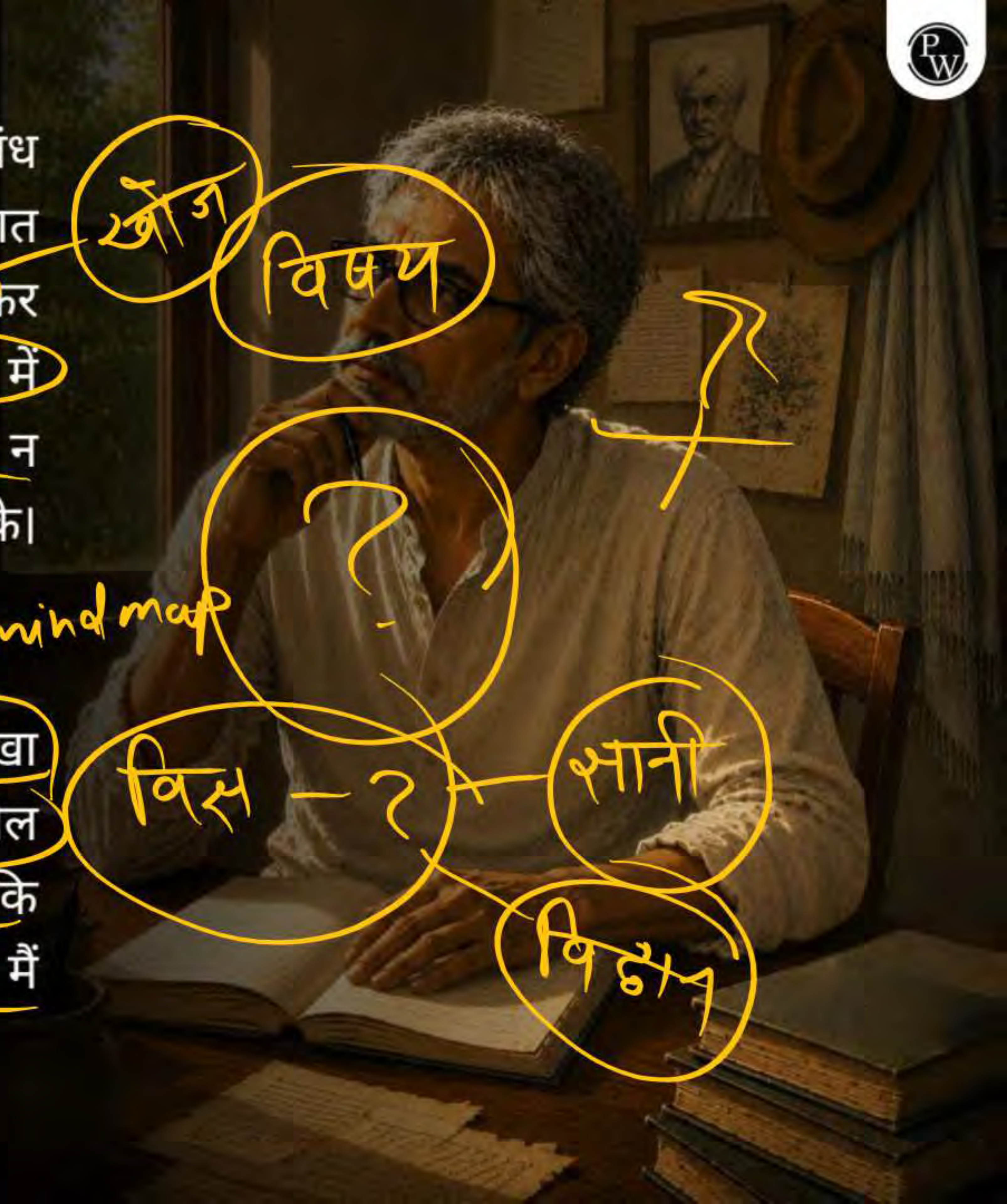

निबंध लिखने के पहले उसका सार दस-पाँच शब्दों में कैसे लिखा जाए? क्या सचमुच हिंदी के सब विज्ञ लेखक पहले से अपने-अपने निबंधों के लिए रूपरेखा तैयार कर लेते हैं? ए.जी. गार्डिनर को तो अपने लेखों का शीर्षक बनाने में ही सबसे अधिक कठिनाई होती है। उन्होंने लिखा कि मैं लेख लिखता हूँ और शीर्षक देने का भार मैं अपने मित्र पर छोड़ देता हूँ। उन्होंने यह भी लिखा है कि शेक्सपीयर को भी नाटक लिखने में उतनी कठिनाई न हुई होगी, जितनी कठिनाई नाटकों के नामकरण में हुई होगी। तभी तो घबराकर नाम न रख सकने के कारण उन्होंने अपने एक नाटक का नाम रखा 'जैसा तुम चाहो'। इसलिए मुझसे तो रूपरेखा तैयार न होगी।

अब मुझे शैली निश्चित करनी है। आचार्य महोदय का कथन है कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए। इसके लिए वाक्य छोटे-छोटे हों, पर एक-दूसरे से संबद्ध। यह तो बिल्कुल ठीक है। मैं छोटे-छोटे वाक्य अच्छी तरह लिख सकता हूँ। पर मैं हूँ मास्टर। अपनी विद्वता का प्रदर्शन करने के लिए, अपना गौरव स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि वाक्य कम-से-कम आधे पृष्ठ में तो समाप्त हों। बाणभट्ट ने कादंबरी में ऐसे ही वाक्य लिखे हैं। वाक्यों में अस्पष्टता भी चाहिए, क्योंकि यह अस्पष्टता या दुर्बोधता गांभीर्य ला देती है। इसीलिए संस्कृत के प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष ने जान-बूझकर अपने काव्य में ऐसी गुत्थियाँ डाल दी हैं, जो अज्ञो से न सुलझ सकें और सेनापति ने भी अपनी कविता दुर्बोध कर दी है।

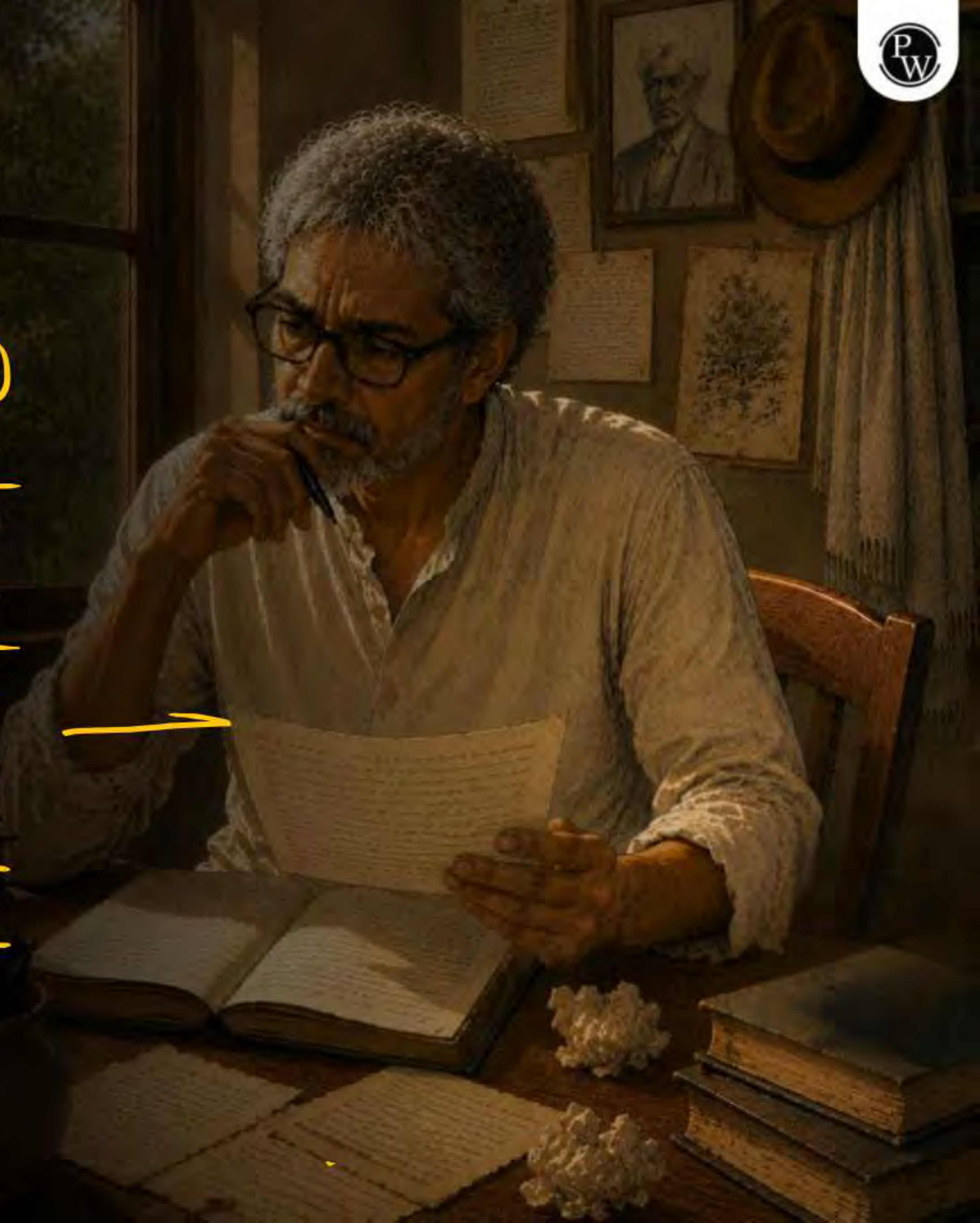

तभी तो अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावेश भी निबंधों के लिए आवश्यक बताया जाता है। तब क्या किया जाए?

अंग्रेजी के निबंधकारों ने एक दूसरी ही पद्धति को अपनाया है। उनके निबंध इन आचार्यों की कसौटी पर भले ही खरे सिद्ध न हों, पर अंग्रेजी साहित्य में उनका मान अवश्य है। उस पद्धति के जन्मदाता मानटेन समझे जाते हैं। उन्होंने स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया। ऐसे निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छंद रचनाएँ हैं।

उनमें न कवि की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गंभीर तर्क पूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है। ये निबंध तो उस मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं, जिसमें न ज्ञान की गरिमा रहती है और न कल्पना की महिमा, जिसमें जीवन का गौरव भूलकर हम अपने में ही लीन हो जाते हैं, जिसमें हम संसार को अपनी ही दृष्टि से देखते हैं और अपने ही भाव से ग्रहण करते हैं। तब इसी पद्धति का अनुसरण कर मैं भी क्यों न निबंध लिखूँ। पर मुझे तो दो निबंध लिखने होंगे।

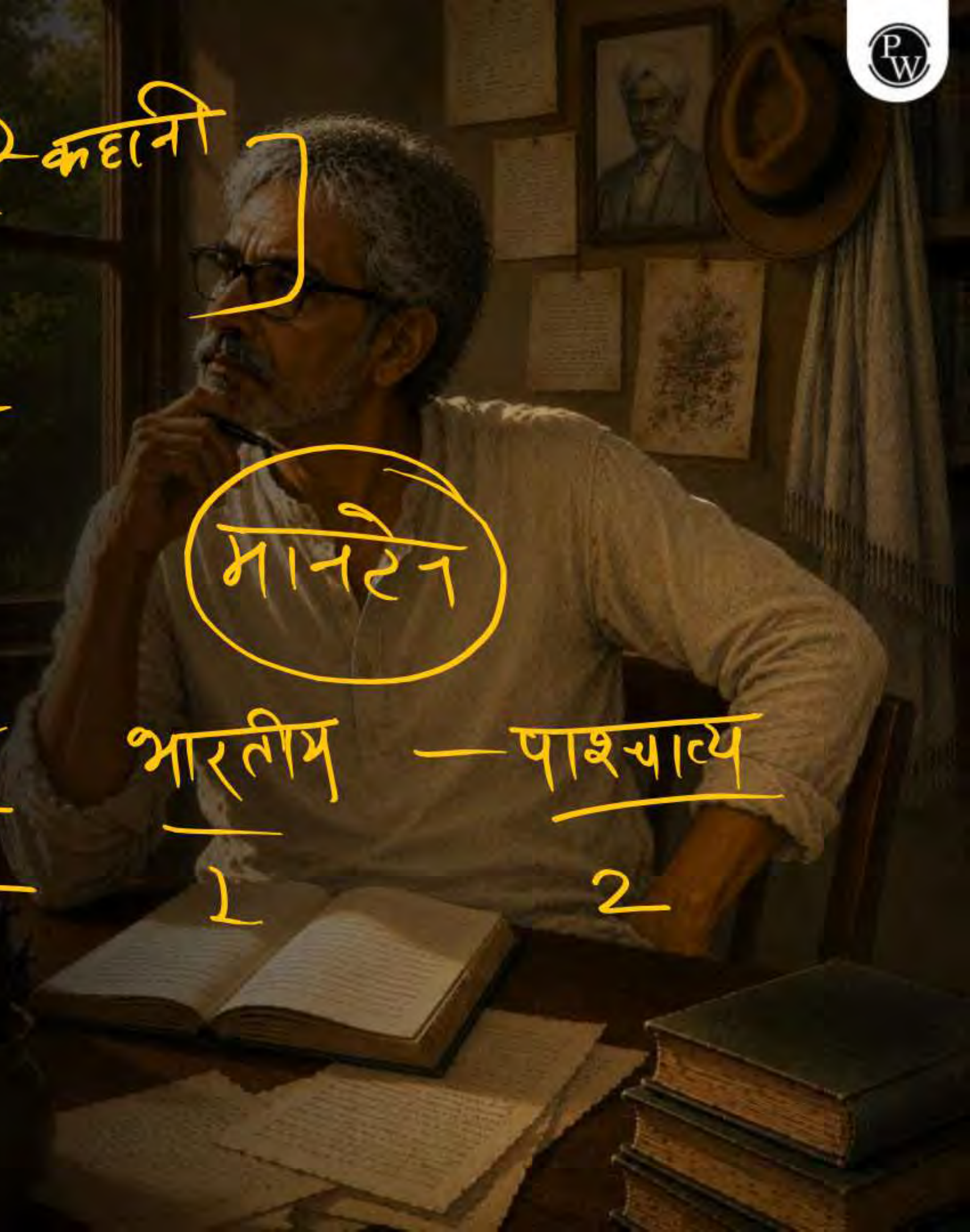

मुझे अमीर खुसरो की एक कहानी याद आई। एक बार प्यास लगने पर वे एक कुएँ के पास पहुँचे। वहाँ चार औरतें पानी भर रही थीं। पानी माँगने पर पहले उनमें से एक ने खीर पर कविता सुनने की इच्छा प्रकट की, दूसरी ने चरखे पर, तीसरी ने कुत्ते पर और चौथी ने ढोल पर। अमीर खुसरो प्रतिभावान थे, उन्होंने एक ही पद्य में चारों की इच्छाओं की पूर्ति कर दी। उन्होंने कहा —

खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।।

मुझमें खुसरो की प्रतिभा नहीं है, पर उनकी इस पद्धति को स्वीकार करने से मेरी कठिनाई आधी रह जाती है। मैं भी एक निबंध में इन दोनों विषयों का समावेश कर दूँगा।

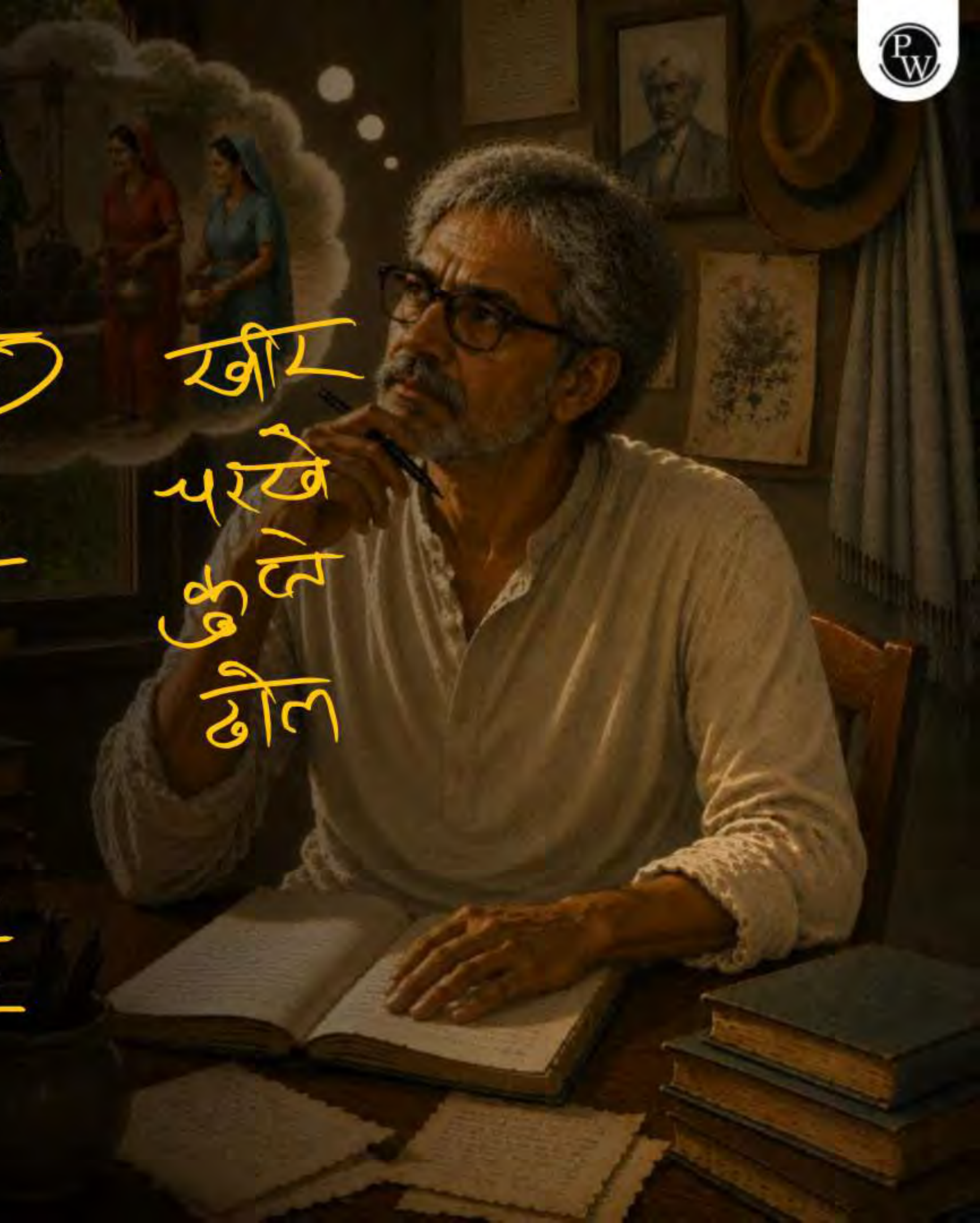

(1) घाटा निबन्ध (A.G. Exam)

(2) सच्ची अनुकृति (मानटेन)

(3) निबन्ध एक मिश्रण (अमीर खुसरो)
(संयुक्त कर देगी)

दूर के ढोल सुहावने होते हैं, क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर संध्या समय, किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशील नव-वधू की कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नव-वधू के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कंपन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं।

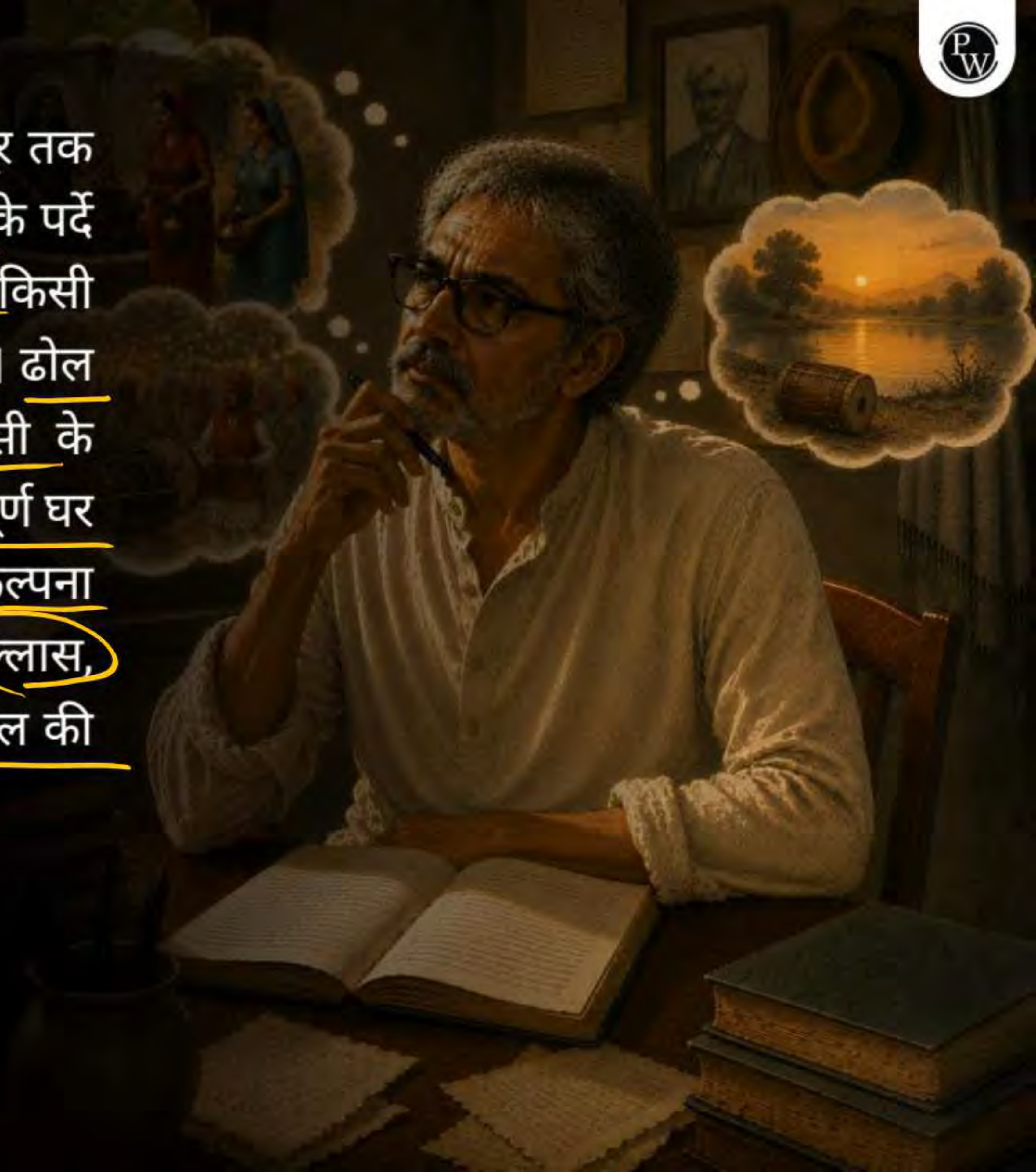

सच तो यह है कि ढोल की ध्वनि के साथ आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत, ये तीनों मिले रहते हैं। तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती और दूरस्थ लोगों के लिए तो वह अत्यंत मधुर बन जाती है।

यह बात सच है कि दूर रहने से हमें यथार्थता की कठोरता का अनुभव नहीं होता। यही कारण है कि जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है; जो वृद्ध हो गए हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है।

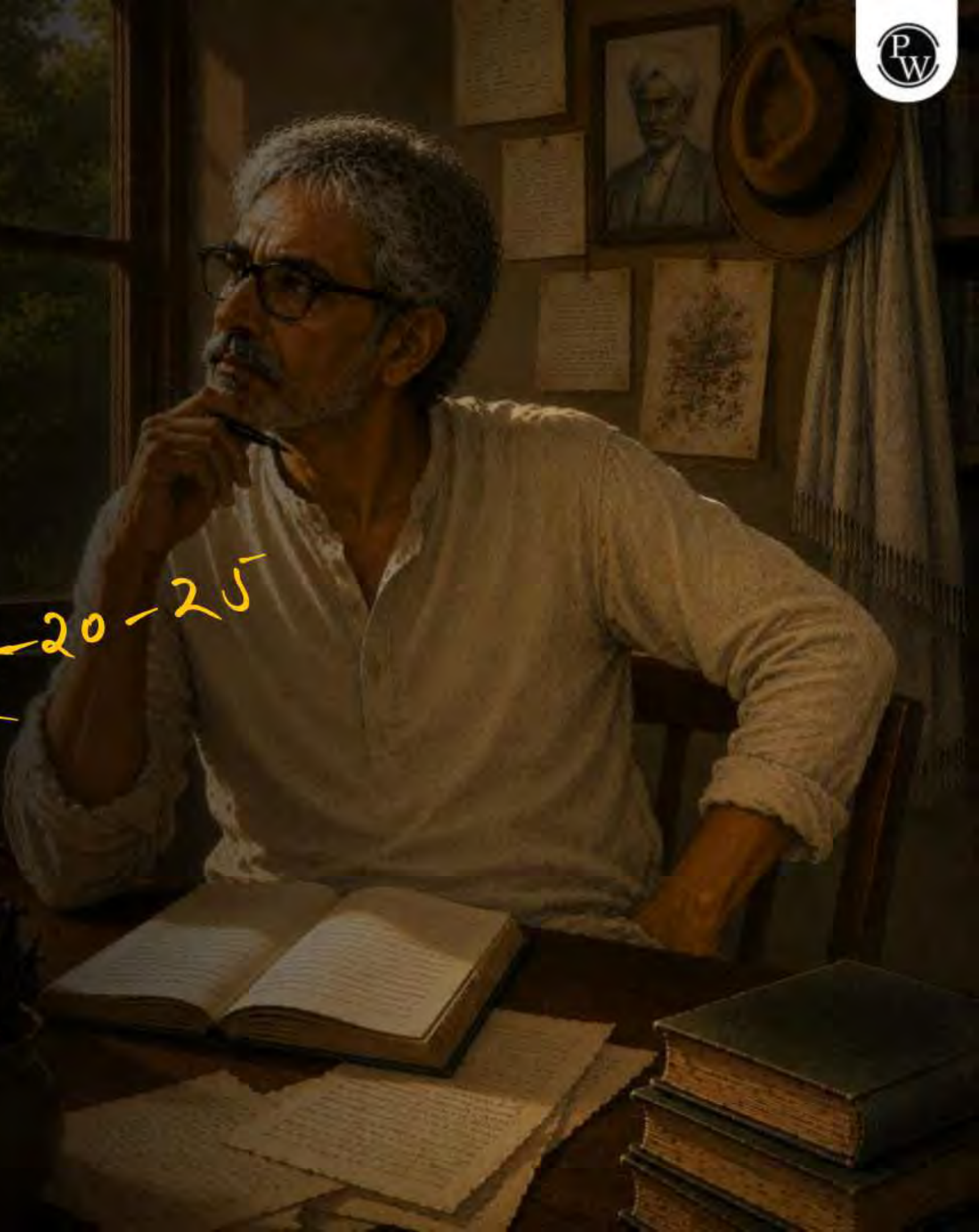

वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत-गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गए हैं, पर सुधारों का अंत कब हुआ है?

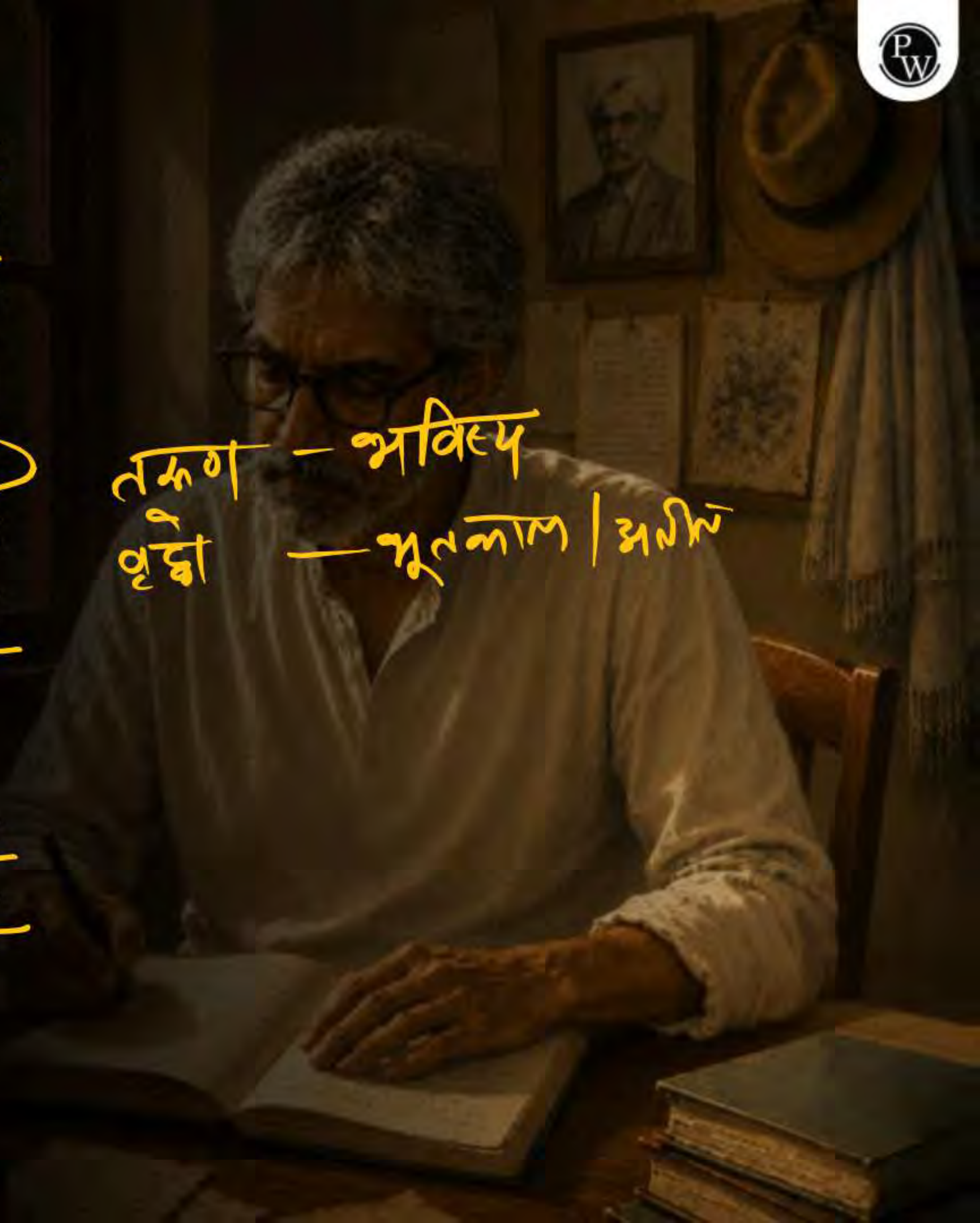

भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर-नगर और गाँव-गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नए-नए दोष उत्पन्न होते जाते हैं और नए-नए सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अंत है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं और उन सुधारों का फिर नव सुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

हिंदी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जाएगा और आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

तरुण → वृद्ध → तरुण → वृद्ध

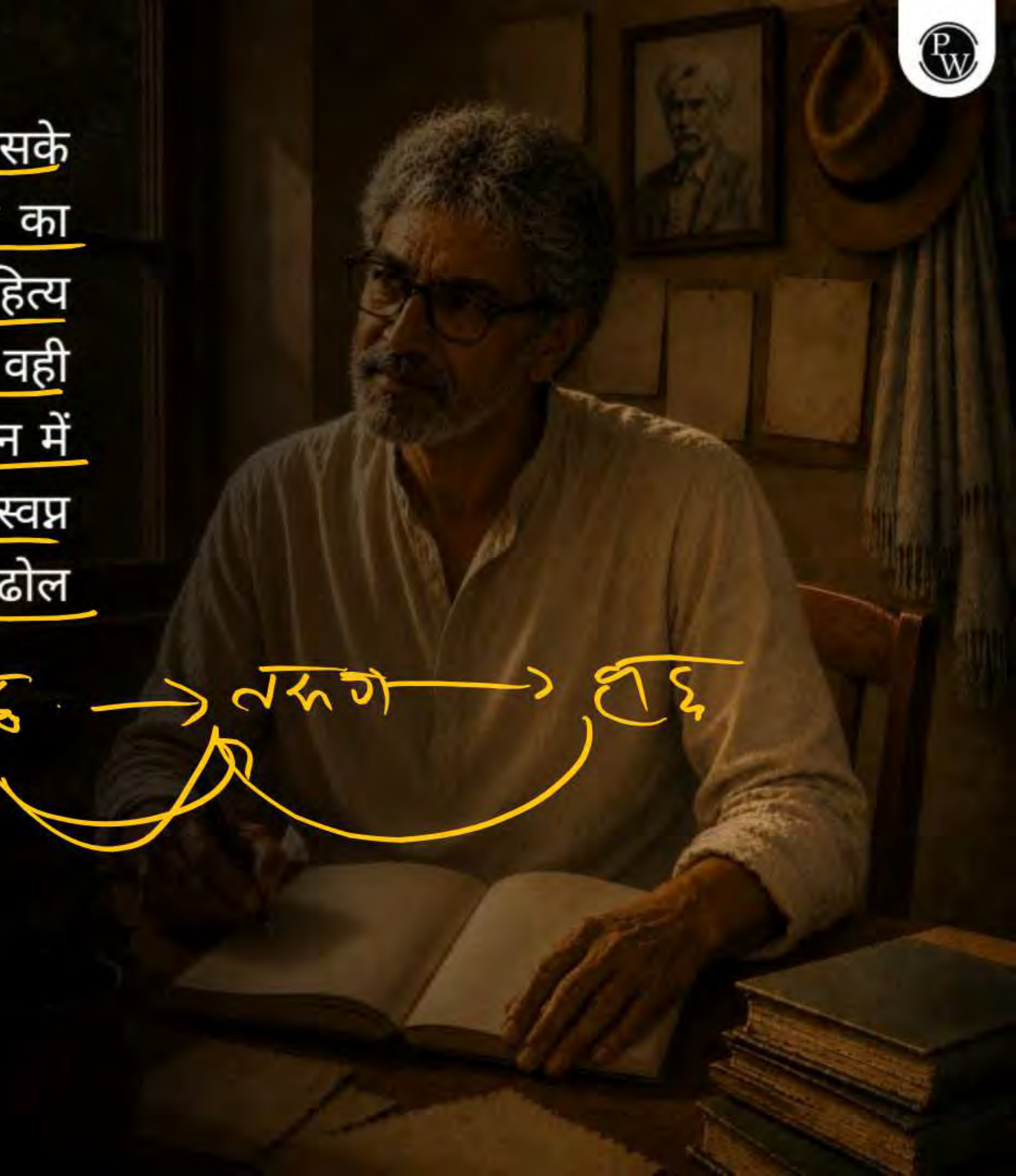

बहुविकल्पीय
प्रश्न
?
A
B
C
D

प्रश्न

ए. जी. गार्डिनर के अनुसार, लिखने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण क्या है?

1. विषय का चुनाव
2. विशेष मानसिक स्थिति
3. कठिन परिश्रम
4. परीक्षा का दबाव

प्रश्न

लेखक के अनुसार, निबंध लिखने से पहले किसकी रूपरेखा बनाना कठिन है?

1. निबंध की
2. 'जैसा तुम चाहो' की
3. 'दूर के ढोल सुहावने' की
4. नाटकों की

प्रश्न

लेखक ने शेक्सपियर के किस नाटक का उल्लेख किया है?

1. ओथेलो
2. मैकबेथ
3. जैसा तुम चाहो
4. हेमलेट

प्रश्न

अंग्रेजी निबंध-लेखन पद्धति के जन्मदाता किन्हें माना गया है?

1. शेक्सपियर
2. मानटेन
3. बेकन
4. एडिसन

प्रश्न

संसार का चित्र किन लोगों को अत्यधिक मनमोहक प्रतीत होता है?

1. जो वृद्ध हो चुके हैं
2. जो जीवन–संग्राम से दूर हैं
3. जो अतीत का स्वप्न देखते हैं
4. जो वर्तमान से असंतुष्ट हैं

प्रश्न

तरुण किसका समर्थन करते हैं?

1. अतीत–गौरव का
2. वर्तमान का
3. क्रांति का
4. बाल्यावस्था का

प्रश्न

'वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है'–इस कथन का क्या अभिप्राय है?

1. तरुण और वृद्ध दोनों को वर्तमान की वास्तविकताएँ सुखद नहीं लगतीं।
2. वर्तमान में न तो भविष्य की संभावना है और न ही अतीत की सुखद स्मृतियाँ।
3. तरुण भविष्य को और वृद्ध अतीत को वर्तमान में देखना चाहते हैं।
4. उपर्युक्त सभी

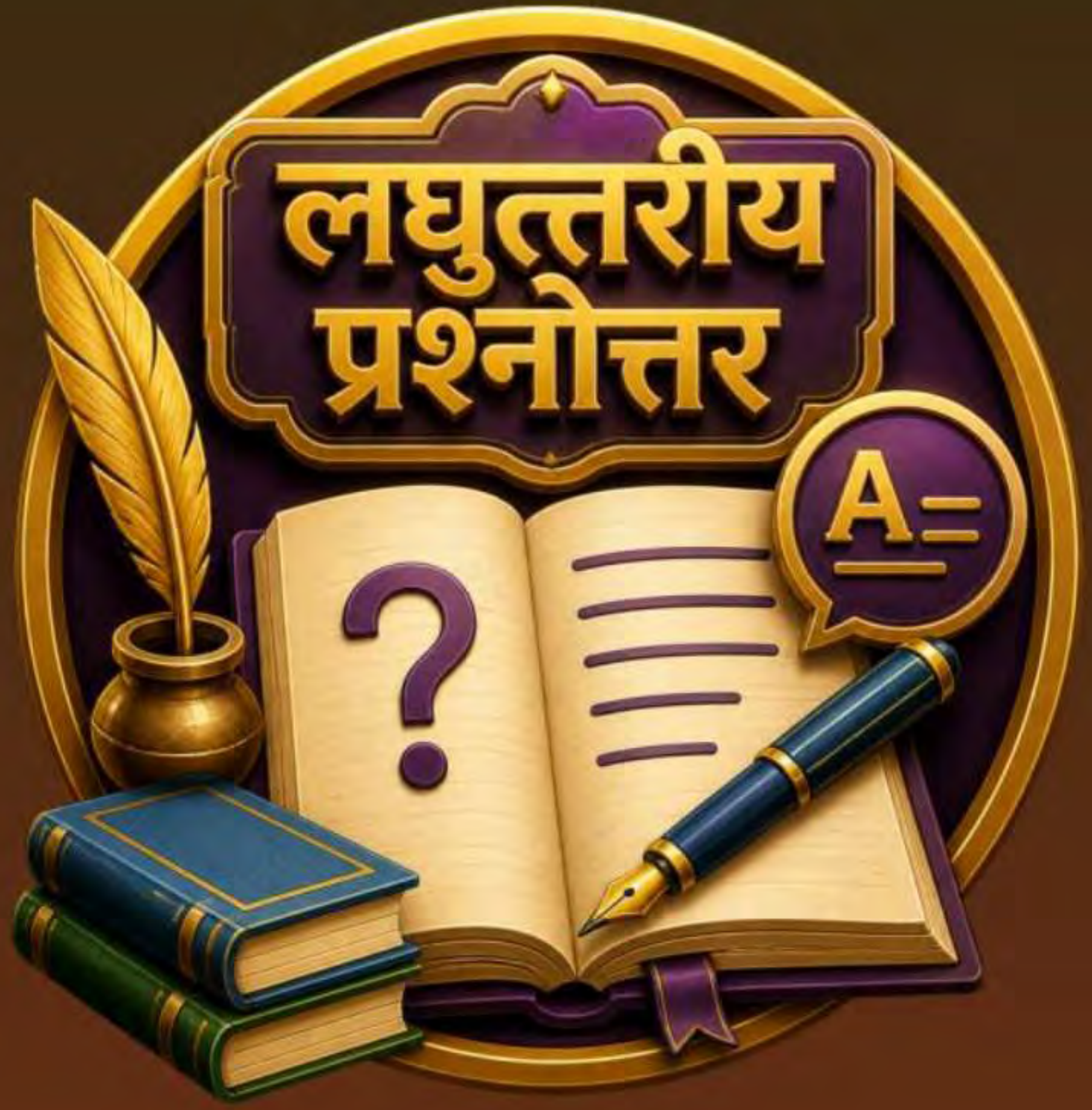
लघुत्तरीय
प्रश्नोत्तर
A

प्रश्न

निबंध लेखन के विषय में ए. जी. गार्डिनर और लेखक के विचारों में क्या अंतर है?

उत्तर

ए. जी. गार्डिनर के अनुसार निबंध लिखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें भाव अपने आप उत्पन्न होते हैं। उन्हें किसी विशेष मेहनत की आवश्यकता नहीं होती। जबकि लेखक का कहना है कि उसे निबंध लिखने के लिए काफी सोच-विचार और परिश्रम करना पड़ता है। उसके लिए यह काम आसान नहीं है।

प्रश्न

लेखक के अनुसार वृद्ध और तरुण दोनों ही वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं, पर दोनों की असंतुष्टि के कारण भिन्न हैं। आपके विचार से उनकी असंतुष्टि के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर

तरुण भविष्य के सपने देखते हैं और उसे बेहतर मानते हैं, इसलिए वे वर्तमान से संतुष्ट नहीं होते। दूसरी ओर, वृद्ध अपने अतीत को सुखद और श्रेष्ठ मानते हैं, इसलिए उन्हें वर्तमान अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार दोनों की असंतुष्टि के कारण अलग-अलग होते हैं।

प्रश्न

नमिता और अमिता किन विषयों पर निबंध लिखवाना चाहती हैं? उनके द्वारा सुझाए गए विषयों पर निबंध लिखने में लेखक को क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?

उत्तर

नमिता "दूर के ढोल सुहावने होते हैं" और अमिता "समाज-सुधार" विषय पर निबंध लिखवाना चाहती हैं। लेखक को इन विषयों पर लिखने में कठिनाई हुई, क्योंकि उसके पास पर्याप्त सामग्री नहीं थी और समय भी बहुत कम था। उसे तुरंत निबंध तैयार करना था।

प्रश्न

निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध लिखने की कौन-सी युक्तियाँ सुझाई हैं? आप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं?

उत्तर

आचार्यों के अनुसार निबंध छोटा, स्पष्ट और सुगठित होना चाहिए। उसकी पहले रूपरेखा बनानी चाहिए और भाषा सरल व प्रभावशाली होनी चाहिए। मैं निबंध लिखने से पहले विषय को समझता/समझती हूँ, मुख्य बिंदु लिखता/लिखती हूँ और फिर उन्हें क्रम से व्यवस्थित करके निबंध तैयार करता/करती हूँ।

प्रश्न

मानटेन ने "जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया।" निबंध लेखन के लिए देखने, सुनने और अनुभव करने की क्या उपयोगिता हो सकती है?

उत्तर

देखने, सुनने और अनुभव करने से हमें वास्तविक और गहरा ज्ञान मिलता है। इससे निबंध में सच्चाई और स्पष्टता आती है। ऐसे निबंध अधिक रोचक और प्रभावशाली बनते हैं, क्योंकि उनमें लेखक के अपने अनुभव झलकते हैं।

प्रश्न

लेखक ने ए.जी. गार्डिनर के 'हैट' और 'खूँटी' वाले उदाहरण के माध्यम से निबंध लेखन की किस सूक्ष्मता को स्पष्ट किया है?

उत्तर

लेखक ने ए.जी. गार्डिनर के इस उदाहरण के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि निबंध लेखन में मुख्य वस्तु 'विषय' नहीं, बल्कि लेखक के 'मनोभाव' होते हैं।
जिस प्रकार हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम आ सकती है, उसी प्रकार अपने मन के वेग और उमंग को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय माध्यम बन सकता है।
यहाँ 'हैट' लेखक के विचारों और हृदय के आवेग का प्रतीक है, जबकि 'खूँटी' केवल वह शीर्षक या विषय है, जिस पर लिखना है।

प्रश्न

निबंधशास्त्र के आचार्यों के अनुसार एक आदर्श निबंध की भाषा और शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर

निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध के लिए निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं:

- भाषा में प्रवाह होना चाहिए और वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए, जो एक-दूसरे से पूरी तरह संबद्ध हों।
- लेखन में सामग्री (विचारों का संग्रह) और शैली (अभिव्यक्ति का ढंग) दोनों का उचित सामंजस्य होना चाहिए।
- निबंध के प्रभावशाली होने के लिए अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावेश भी आवश्यक माना गया है।

प्रश्न

'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' इस लोकोक्ति की सार्थकता पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

लेखक के अनुसार ढोल की ध्वनि पास बैठे लोगों के लिए कर्कश होती है और उनके कान के पर्दे फाड़ती है, लेकिन वही ध्वनि दूर नदी तट पर बैठे व्यक्ति को मधुर संगीत प्रतीत होती है। इसका कारण यह है कि दूरी यथार्थ की कठोरता को कम कर देती है और मनुष्य अपनी कल्पना से उसमें मधुरता भर लेता है। जिस प्रकार ढोल की कर्कशता दूर जाकर मधुर हो जाती है, उसी प्रकार जीवन की कठिनाइयाँ भी दूर से देखने पर सुखद और मनमोहक लगने लगती हैं।

प्रश्न

पाठ के इस कथन पर विचार कीजिए– "जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं।" इसका क्या अभिप्राय है?

उत्तर

यह कथन जीवन की प्रगतिशीलता और परिवर्तनशीलता को दर्शाता है। समय के साथ समाज की आवश्यकताएँ बदलती हैं, जिससे पुराने समय में अपनाए गए सुधार और नियम वर्तमान संदर्भ में अपनी सार्थकता खो देते हैं और दोष बन जाते हैं। इसीलिए समाज में निरंतर नए सुधारों की आवश्यकता बनी रहती है और जो आज सुधार है, वह भविष्य में पुनः संशोधन की अपेक्षा रखेगा।

प्रश्न

अमीर खुसरो की कहानी का उल्लेख लेखक ने अपनी किस विवशता या समाधान के लिए किया है?

2

उत्तर

लेखक के सामने एक साथ दो अलग-अलग विषयों पर निबंध लिखने की विवशता थी, जिसमें एक विषय 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' था और दूसरा 'समाज-सुधार था। इस कठिनाई का समाधान खोजते हुए लेखक को अमीर खुसरो की वह कहानी याद आई, जिसमें उन्होंने एक ही पद्य में चार महिलाओं की चार अलग-अलग इच्छाएँ पूरी कर दी थीं। इसी पद्धति को अपनाते हुए लेखक ने भी यह निर्णय लिया कि वह एक ही निबंध में दोनों विषयों का समावेश कर देगा। इस प्रकार, अमीर खुसरो की कहानी लेखक की विवशता का समाधान बन गई।

प्रश्न

मानटेन द्वारा अपनाई गई निबंध लेखन की पद्धति परंपरागत आचार्यों की पद्धति से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर

मानटेन की पद्धति परंपरागत पद्धति से पूर्णतः भिन्न है, क्योंकि उनके निबंध 'मन की स्वच्छंद रचनाएँ' हैं। जहाँ आचार्य तर्कपूर्ण विवेचना और गंभीर शैली पर बल देते हैं, वहीं मानटेन ने अपनी सच्ची अनुभूतियों, जो कुछ उन्होंने देखा, सुना और अनुभव किया, उसे ही बिना किसी बनावट के लिपिबद्ध कर दिया। इसमें न तो ज्ञान की गरिमा का बोझ होता है और न ही कल्पना की अतिशय महिमा, बल्कि इसमें लेखक की अपनी दृष्टि और उल्लास की अभिव्यक्ति होती है।

गृहकार्य

दो प्रश्नों के उत्तर लिखकर आना।

धन्यवाद